Vol 3 Issue 4 Jan 2014

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

हिन्दी में दलित साहित्य की अवधारणा एक चिंतन

Sunil Kumar Jangir and Bhagirath Lal Meghwal

Assit. Professor and PhD. Supervisor Political science dept.Jjt university churella.
Research Scholar , Political Science Department , JJT University, Raj.

सारांश :

1. दलित साहित्य क्या है?

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य जीवन में जगत का प्रतिबिम्ब होता है जो समाज की आशा एवं आकांक्षा से अछूता नहीं रह सकता। इसी के साथ ही दलित साहित्य उत्तर भारत के हिन्दी क्षेत्र में, तीस के दशक से आज तक भारतीय साहित्य में स्थान बना चुका है। इसलिए हिन्दी दलित साहित्य पर विमर्श आवश्यक हो गया है।

प्रस्तावना :

दलित साहित्य : पूर्व राज्यपाल डॉ. माता प्रसाद के शब्दों में, ''दलित साहित्य केवल दलितों का लेखन नहीं है, बल्कि जिन्होंने भी उसकी पीड़ा का अनुभव करके उन पर साहित्य सृजन किया गया है, वह सृजन दलित साहित्य की श्रेणी में आता है। जो गैर–दलितों की स्थिति का वास्तविक स्थिति का चित्रण करता है, वह दलित साहित्यकार है।''

दलित साहित्य आन्दोलन के समर्थ रचनाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार, ''दलित शब्द दबाये गये, शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित के अर्थों के साथ जब साहित्य से जुड़ता है, तो विरोध और नकार की ओर संकेत करता है। वह नकार चाहे व्यवस्था का हो, सामाजिक विसंगतियों या धार्मिक रूढ़ियों, आर्थिक विषमताओं का हो या भाषा, प्रान्त के अलगाव का हो या साहित्यिक परम्पराओं, मापदण्डों या सौन्दर्यशास्त्र का हो, दलित साहित्य नकार का साहित्य है जो संघर्षों से उपजा है जिसमें समता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व का भाव है और वर्ण व्यवस्था से उपजे जातिवाद का विरोध है।''

इसी क्रम में अर्जुन कवि सामाजिक बुराईयों पर कहते हैं –

''मैंने पुस्तक ना पढ़ी, मैंने पढ़ा समाज।
जो देखा वो दुःखी, पुराने काज रिवाज।।''

एन.आर. सागर का कहना है कि, ''ऐसा साहित्य जो गांव–देहात के कच्चे–पक्के घरौंदो से लेकर महानगरों की मलीन बस्तियों में कृमि–कीटों की भांति जीवनयापन करने वाले उपेक्षित–प्रवंचित सर्वहारा वर्ग को ईश्वरवाद, प्रारब्धवाद, आत्मा तथा पुनर्जन्म के मकड़जाल से मुक्त कर अस्मिता का बोध कराये और उन्हें कुंठाजनित आक्रोश को समेकित कर उसे अपने मानवीय अधिकारों की अभिप्राप्ति हेतु संघर्ष के लिए बाध्य कर दे, वही दलित साहित्य है।''

कवि दामोदर मोरे संघर्ष एवं क्रांति का एलान करते हुए कहते हैं–

''कैसे कहूं तुझे मैं पूरब?
अंधेरे के डर से उग नहीं रहा है सूरज
मैं तो अंधेरे से लड़ता रहूंगा
मैं ही एक नया सूरज।''

दलित साहित्य के पहले अधिवेशन मुम्बई में प्रस्ताव सं. 5 में कहा गया था, ''दलितों के द्वारा दलितों के जीवन पर लिखा गया साहित्य, दलित साहित्य है।''

Title: "*हिन्दी में दलित साहित्य की अवधारणा एक चिंतन* ".Source: Review of Research [2249-894X] Sunil Kumar Jangir and Bhagirath Lal Meghwal yr:2014 vol:3 iss:4

इसी क्रम में डॉ. शरण कुमार लिम्बाले, डॉ. पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी, डॉ. कुमुद पाटिल, नारायण सुर्वे, डॉ. धर्मवीर, डॉ. समुनाक्षर, डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक' आदि की दलित साहित्य के बारे में मिली–जुली परिभाषाऐं हैं। प्रश्न यह है कि क्या दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है?दूसरा दूसरा प्रश्न यह कि क्या दलित चेतना पर गैर–दलितों द्वारा रचित साहित्य इस श्रेण में आयेगा?कंवल भारती के अनुसार, ''यह मानना ही गलत है कि गैर–दलित लेखक दलित साहित्य नहीं लिख सकते। आखिर नारी प्रश्नों पर बेहतरीन साहित्य पुरूषों ने ही लिखा है। फिर गैर–दलित लेखक दलित सवालों पर दलित लेखकों से भी ज्यादा सशक्त और गम्भीर लेखन गैर–दलितों ने लिखा है।''

डॉ. हरिनारायण ठाकुर ने लिखा है, ''गैर–दलित लेखन में यदि दलितों के प्रति सच्ची संवेदना और मुक्ति की चिन्ता है, तो ऐसे साहित्य को दलित साहित्य मानने में कोई हर्ज नहीं है। दलित साहित्यकारों को इस दिशा में उदारवादी होना चाहिए।''

इसी क्रम में यशवंत मनोहर व राजकुमार सैनी की दलित साहित्य के बारे में मिश्रित परिभाषाऐं हैं। एक पंक्ति में दलित साहित्यकार, दूसरी में गैर–दलित साहित्यकार एवं दलित साहित्यकारों की एक ऐसी पंक्ति जरूर है जो केवल डॉ. अम्बेडकर को ही दलित साहित्य का आधार मानती है अन्य महापुरूषों का नहीं। डॉ. तेजसिंह दलित साहित्य को 'अम्बेडकरवादी साहित्य' कहना पसन्द करते हैं। कवि दामोदर मोरे लिखते हैं, ''अम्बेडकरवाद ही दलित साहित्य का दर्शन है। बुद्ध, फुले, अम्बेडकर का लेखा–जोखा ही दलित साहित्य का दर्शन है।'' एक बड़ा वर्ग दलित साहित्य के सृजन का मूल स्रोत डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा को ही मानता हैं जिसका झुकाव बुद्ध दर्शन की ओर है। इस साहित्य में आज जो भी क्रांति देख रहे हैं यह अम्बेडकरवादी दर्शन की ही देन है।
कवि दामोदर मोरे अपनी क्रांतिकारी कविता 'जय भीम' में लिखते हैं –

''हमारे दिल की धड़कन है जय भीम
हमारे कलेजे का टुकड़ा है जय भीम
तुम चाहो तो जय भीम क्रांति है
तुम चाहो तो जय भीम शान्ति है
जय भीम इंसानियत से महकती आग है
तुम चाहो तो,
जय भीम न बुझने वाली आग है।''

दलित लेखन में दो दृष्टिकोण नजर आते हैं। एक विशुद्ध अम्बेडकरवादी जो बुद्धशरण में जाना चाहते हैं दूसरा अम्बेडकरवादी होने के बावजूद धर्म से मुक्त होकर वैज्ञानिक विचारों को प्रमुखता देता है।

आधुनिक युग में प्रेमचन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', नागार्जुन, राजेन्द्र यादव तथा मैत्रेयी पुष्पा आदि के साहित्य में दलित चेतना परिलक्षित है। 1914 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' हिन्दी की प्रमुख दलित कविता है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम की 'सूरज', 'सांग' एवं 'मां' कहानी, छप्पर (उपन्यास), मोहनदास नैमिशराय का अदालतनामा(नाटक), अपने–अपने पिंजरे (आत्मकथा), 'मुक्तिपर्व', 'विरांगना झलकारी बाई', 'आज बाजार बन्द है' आदि महत्वपूर्ण उपन्यास है। डॉ. माता प्रसाद की 'तड़प मुक्ति की', 'झोपड़े से राजमहल तक', आत्मकथाऐं, ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अम्मा' (कहानी), 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', 'जूठन' आत्मकथाऐं, 'महायुद्ध' (कविता), 'जंगल की रानी' (कहानी), दामोदर मोरे की 'पलके सुलग रही है' (कविता पुस्तक), सूरजमल चौहान की 'आज की अहिल्या' (कहानी), 'तिरस्कार' (आत्मकथा), डॉ. जीतसिंह आनन्द की 'श्रद्धांजलि', 'मामा का ब्याज', 'कलम बोलती है', कहानियां प्रसिद्ध हैं। राजेश कुमार बौद्ध की 'पीड़ा' (कविता), रत्नकुमार की 'शर्त', शत्रुध्न कुमार सिंह की 'राम–राम सत् है', कृष्ण गोपाल की 'छमिया', गुरूचरणसिंह की 'काली सड़क', गौरीशंकर नागदंश की 'जंगल की आग', भागीरथ मेघवाल की 'सूरज की चिंता', गिरीराज अग्रवाल की कही कविता 'अस्वीकृति', दयानन्द बटोही की 'सुरंग', चन्द्रेश्वर कर्ण की 'सुरंग से गुजरते हुए', रत्नकुमार सांभरिया की 'क्षितिज' कहानियां प्रसिद्ध है। डॉ. डी.आर. जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजिल', सोना कांबले की 'यादों के पंछी', श्योराज सिंह 'बेचैन' की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', आत्मकथाऐं हैं। ऐसे और सैंकड़ों साहित्यकार उपस्थित है जिन्होंने दलित साहित्य को ऊर्जा दी है। गैर–दलित समीक्षकों में डॉ. शिवकुमार मिश्र, मैनेजर पाण्डेय, मृदुला गर्ग आदि प्रमुख है।

2. हिन्दी दलित साहित्य के मौलिक सिद्धान्त

दलित विमर्श से उपजा साहित्य आज भारतीय साहित्य में अपना स्थान बनाते हुए यह सचमुच में दर्पण है जिसमें बहुजन समाज का चेहरा साफ दिखाई देता है। दलित साहित्य प्रगतिशील साहित्य का सशक्त रूप है। यह जातिगत भिन्नता की संस्कृति के विरूद्ध अपनी आवाज उठाते हुए अधिकार की भाषा बोलता है। इस साहित्य में यातना का वर्णन ही नहीं मुक्ति की छटपटाहट भी है।

दलित साहित्य न केवल दलित उत्पीड़न का दस्तावेज है बल्कि यह एक विद्रोह का साहित्य भी है। मनुष्य को केन्द्र मानते हुए अस्पृश्यों को जो समाज में यातना और अपमान की अभिव्यक्ति प्रायः इसी साहित्य में। इसमें

यथास्थितिवाद के विरूद्ध एवं रचनात्मक आन्दोलन मौजूद है। दरअसल दलित साहित्य 'वाह' का साहित्य न होकर 'आह' का साहित्य है। इसमें 'नकार' और 'विद्रोह' दलितों की वेदना के गर्भ में पैदा हुआ है। यह साहित्य भारतीय समाज को मानवीय मूल्यों की तरफ सजग करते हुए सामाजिक परिवर्तन की दिशा में मानवीय सरोकारों को निर्देशित करता है। दलित साहित्य एक तरफ दलितों की मुक्ति का प्रखर प्रवक्ता है वहीं दूसरी तरफ आम आदमी की स्वतंत्रता का पक्षधर भी है। इसमें मानवीय संवेदनाओं और चेतनाओं का स्रोत है जिसमें जनमंगल की कामनाएं ही कामनाएं हैं। इस साहित्य की कहानियों, कथाओं, उपन्यासों, कविताओं, आलेखों, नाटकों, लोकगीतों की बुनियाद में भोगा हुआ यथार्थ है, भोगे हुए अतीत है और आज की अनुभूति उसकी शक्तिशाली प्रेरणाएं हैं। यह कल्पना एवं सहानुभूति का विरोध करता है क्योंकि दलित साहित्य की रचना ही स्वानुभूत है। परम्परागत साहित्य से अलग पहचान व पृथक धारा प्रदान करते हुए समाज में स्वाभिमान व स्वावलम्बन जागृत करता है। निःसन्देह इस साहित्य की कलम तो धारदार है, पैनी भी। शायद इसीलिए यह चुभ–चुभ गडती भी है। दलित साहित्य अन्याय, शोषण के विरूद्ध प्रतिरोध का स्वर है एवं साहित्य की पूर्णतः संस्कृति सामाजिक है। यह साहित्य परम्पराओं, अंधविश्वास, रूढिवादिता एवं समस्त सामाजिक मान्यताओं से निजात दिलाना चाहता है जो मानवता के खिलाफ है। यह समाज को वैज्ञानिक तर्क की कसौटी और जीवन पद्धति पर खड़ा करना चाहता है। हिन्दुवादी शोषणयुक्त व्यवस्था का प्रतिकार ही इसका मूल सिद्धान्त है। दलित साहित्य नारी जगत को अमूल्य धरोहर मानते हुए पौरूषत्व के बराबर हक दिलाकर नारी दस्तक को और मजबूत करना चाहता है। अपनी आवाज को लेखनी के माध्यम से विश्व धरातल पर पहुंचाने की कोशिश करता रहा है। सारांशतः हिन्दी दलित सामाजिक आन्दोलन है, साहित्यिक आन्दोलन नहीं। यह बुद्ध के दर्शन, अम्बेडकर के विचार एवं ज्योतिबाफुले की क्रांति से ओत–प्रोत है।

3. हिन्दी दलित साहित्य में महिला जगत : पितृसत्ता का पर्दाफाश

दलित समाज का हजारों साल का इतिहास और सत्य यह है कि स्त्री पुरूष के बराबर कमाते हुए कभी बोझ नहीं रही है। एक तरफ गांवों में दलित औरतें पुरूषों के साथ खेतों आदि में काम करती है वहीं दूसरी ओर शहरों में दलित औरतें असंगठित क्षेत्रों में जुटी हैं जैसे– अखबार, धूपबत्ती, कपड़े – लत्ते की फेरी कर बिक्री करना, कबाड़ चुनना, कोयला–लोहा बीनना, चौका–बर्तन साफ करना, निर्माण कार्य, सड़क बनाना, ईंट भट्टों पर कार्य, बीड़ी या खिलौने बनाना। ये अस्वच्छ, न्यूनतम मूल्य और कठोर परिश्रम के काम हैं जो रोजी–रोटी के लिए पहाड़ खोदने से कम नहीं हैं। ऊपर से यौन शोषण की समस्या अलग।

इस प्रकार दलित औरतों का जीवन सचेत पठाकों को ही नहीं, सामान्य पाठकों को भी दहला देता है। अधिकतर दलित महिलाएं निरक्षर एवं अंगूठा टेक हैं। उनमें धार्मिक पाखण्ड, धर्मान्धता एवं रूढ़िप्रियता है जो उनकी प्रगति में बाधक है। समाज ने इस विकृति को प्रकृति मान लिया जिसमें प्रबुद्ध–स्वातत्र्यचेता, दलित लेखिका त्रस्त है जो वैयक्तिक अनुभूतियों से बाहर निकल ही नहीं पाती है। दलित महिलाओं की सक्रिय उपस्थिति कम, प्रतिपक्षी को हरदम जिम्मेदार ठहराना, आन्तरिक मामलों में कतराने की प्रवृत्ति से विमर्श में नहीं आने का कारण है।

विख्यात दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के शब्दों में, – ''दलित आन्दोलन के भीतर एक और आन्दोलन की आहट भी सुनाई पड़ रही है। यह है दलित महिलाओं का आन्दोलन जो समग्र महिला समुदाय के लिए मुक्ति आन्दोलन का होने के साथ–साथ दलित समाज में पितृसत्ता का प्रश्न उठाता है एक तरफ उन्हें हिन्दू परम्पराओं तो दूसरी तरफ पितृसत्ता का बोझ झेलना पड़ता है।''

एक तरफ दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में है वहीं दूसरी तरफ समस्त कठिनाईयों के विपरीत सन् 1970 के बाद से आज तक हिन्दी दलित साहित्य में अपने श्रम और साधनों से अपना खास स्थान बनाते हुए, कई विधाओं में पुरूषों से अग्रिम पंक्ति में खड़ी होकर स्त्री–पुरूष भेद मिटा दिया है। जहां दलित साहित्य ने उन्हें आपबीती कहने तथा लिखने की ताकत दी है उसने स्वयं साहित्य में दस्तक देकर खुद अपना नेतृत्व कर रही है।

एक तरफ वह अपनी लेखनी से हिन्दूवादी परम्पराओं पर चोट करती है वहीं दूसरी तरफ पितृसत्तात्मक चरित्र पर भी आघात करते हुए लिखती है। वह दूहरी तिलमिलाहट करते हुए, अपने वजूद की तलाश में रहते हुए लेखिका के साथ समाज सेविका और राजनीतिज्ञ भी बनी। उसने पुरूष की कलम पर एकाधिकार तोड़ते हुए सदियों से छुपी एवं दबी हुई प्रतिभा मुखरित करने लगी। उसने अपनी अनूभूतियों एवं संवेदनाओं को कलम के माध्यम से कागज पर उकेरकर उत्कृष्ट साहित्य सृजन से सबको चकित कर दिया।

दलित स्त्री आत्मकथाएं, कविताएं, कहानियां, नाटक, उपन्यास, आलोचना, शोध एवं संस्मरण आदि सभी साहित्यिक विधाओं में आत्मसम्मान, गरिमा, समानता का पाठ पढ़ाकर भोगा हुआ यथार्थ लिखती है तो अनुभूति की प्रमाणिकता झलकती है। रमणिका गुप्ता की कविता का नया संकलन 'कैसे करोगे बंटवारा इतिहास का', डॉ. सुशीला टाकभौरे का काव्य संग्रह 'स्वाति बूंदे और खारे मोती' तथा 'तुम यह भी जानो', डॉ. कुसुम मेघवाल की 'हिन्दी उपन्यास एवं दलित नारी' चर्चित पुस्तक एवं 'मंगली एवं अंगारा' कहानी, डॉ. कुसुम वियोगी की 'अंतिम बयान', 'और वह पढ़ गयी' कहानी, कौशल्या वैसंत्री का 'दोहरा अभिशाप', डॉ. सुशीला टाकभौरे का 'शिकंजे का दर्द' आत्म कथांस, सिलिया (कहानी), डॉ. रजतरानी 'मीनू' की 'सुनीता' कहानी प्रसिद्ध है। उदास बुद्धिजीवियों को सम्बोधन में सुशीलाजी कहती है –

'तुम सूरज न उगा सके। कोई बात नहीं
आशा का एक। दीप जला दो
जनमानस में। अपनी कलम से
उद्‌बोधन से। चेतना को जगा दो।'

हिन्दी की कौशल्या वैसंत्री, डॉ. सुशीला टाकभौरे, डॉ. विमल थारोट, रजनी तिलक, डॉ. हेमलता महिश्वर, डॉ. रजतरानी 'मीनू', डॉ. सुमित्रा महरोल, डॉ. रजनी दिसोदिया, अनीता भारती, डॉ. कौशल पंवार, डॉ. कुसुम मेघवाल, कावेरी, सुजाता पारमिता एवं सैंकड़ों की संख्या में दलित लेखिकाएं हैं। आज दलित लेखिकाओं को सामान्य नारीवाद के खांचे में फिट करके नहीं आंका जा सकता है। दलित स्त्री चेतना और दलित साहित्य आन्दोलन की पृष्ठभूमि फुले दम्पत्ति के संघर्ष और चिन्तन से शुरू होती है जिसे डॉ. अम्बेडकर की वैचारिकी में मजबूती और विस्तार मिलता है।

4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी दलित साहित्य का वर्तमान परिवेश

आज हिन्दी के करीब–करीब सभी विधाओं में दलित साहित्य सृजित हो रहा है। देश में हिन्दी दलित साहित्य के सौ से अधिक पत्रिकाएं एवं अखबार नियमित रूप से चल रहे हैं। सदी के अन्तिम दशकों में दलित चेतना उभरते हुए कविता, कहानी और पत्रकारिता में वितान तान दिया है। हंस, कथादेश, वर्तमान साहित्य, मधुमति, पारवी आदि सभी पत्रिकाएं दलित साहित्य विमर्श के विशेषांक निकाल रहे हैं। राष्ट्रीय एवं हर प्रदेश स्तर पर हिन्दी सहित कई भाषाओं में दलित साहित्य अकादमी बनी हुई है जो समाज को सही दिशा दे रही है। इसके अलावा दलित लेखकों के देशभर में सैंकड़ो संगठन भी बने। यही नहीं, दर्जनों शोध कार्य शुरू होने के साथ, उनके लेखन पर कई शोध हो चुके हैं एवं शोध अभी भी हो रहे हैं। अकेले मोहनदास नैमिशराय के लेखन पर अब तक सौ से अधिक शोधार्थी शोध कर चुके हैं। महाविद्यालय, विश्वविद्यालय से लेकर लोक सेवा आयोग / संघ लोक सेवा आयोग स्तर पर पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गया है। कहीं पाठ्यक्रम में शामिल भी किया गया है।

महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में आयोजित राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में दलित साहित्य विषयक चर्चाएं तो आवश्यक रूप से होती ही है। साहित्यकारों को वक्ता के रूप में आमन्त्रित भी किया जाता है। इसकी वजह साहित्य का उत्कृष्ट होना ही तो है। दलित लेखन अब भारत से निकल कर सम्पूर्ण विश्व के शोषित–पीड़ित लोगों पर केन्द्रित होने जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी में दलित साहित्य सम्पूर्ण विश्व धरातल पर आज विद्यमान है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में दलित साहित्य विषयक चर्चाएं होती है, अलग से सत्र रखे जाते हैं। इन अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी दलित साहित्यकार अपनी आवाज बुलन्द करते रहे हैं, और तो और दलित साहित्यकार खुद अपने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करते हैं। इन साहित्यकारों ने अपने सम्मेलन भारत, नेपाल, ब्रिटेन एवं अन्य देशों में आयोजित किये हैं और आगे भी होने की संभावना बन रही है। यह दलित साहित्य का विस्तार ही है। आज दलित लेखन भिन्न साहित्य के सम्पर्क में है एवं भूमण्डलीकरण के युग में इस साहित्य पर कोई संकट नहीं दिखता। दलित वर्ग में भी अभिजात्य वर्ग में उदय की आन्तरिक प्रक्रिया गतिमान होने के बाद इस साहित्य का विभाजन नहीं है।

यह साहित्य सौन्दर्य शास्त्र के नये मापदण्डों से निर्मित होकर छन्द, सौन्दर्य, अलंकार, उपमाओं की सीमाओं से ऊपर असीमित दायरे में अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों से अलग आज भी अपना वजूद कायम रखा हुआ है। वर्तमान में हिन्दी सहित अन्य साहित्य जगत में 'एकला चलो रे' की नीति से दावा करता है कि स्वानुभूत, यथार्थ एवं नकार सिर्फ दलित साहित्य में है अन्य साहित्य में नहीं। यह सृजन धर्म के बंधन मे असीमित एवं अनवरत संवर्द्धन हो रहा है। यह साहित्य आज व्यक्तिगत और जातिवादी नहीं रह गया, बल्कि इसका फलक वैश्विक हो गया है।

5. 21वीं सदी का दलित साहित्य : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

हिन्दी साहित्य के आकाश में ध्रुव तारे के समान जब से दलित साहित्य का प्रादुर्भाव हुआ, तब से ही दलित साहित्य को लेकर विवाद है। दलित साहित्य हिन्दी भूमण्डल में उपग्रह की भांति, शुक्र ग्रह की तरह चमकते हुए भी सिर्फ दलित भूमण्डल के इर्द–गिर्द ही धीमी गति से घूमता रहता है। दलित साहित्य 'एकला चलो रे' की नीति के कारण साहित्य जगत में जो वह स्थान लेना चाहता है, वह मिल नहीं पा रहा है। इस साहित्य में 'स्वानुभूत', 'विद्रोह' व 'नकार' होने से अधिकतक दलित वर्ग के लोग की पढ़ते हैं। गैर–दलित साहित्यकारों द्वारा लिखे गये साहित्य को लेखक सहानुभूति का साहित्य कहकर खारिज कर रहे हें। आश्चर्य का विषय है कि दलित लेखन का मूल्यांकन साहित्य जगत में क्यों नहीं किया जा रहा है?दलित साहित्य पर हिन्दी के आलोचक चुप्पी साधे हुए हैं या दलित लेखन अपेक्षा के योग्य है।

इस साहित्य को अपनी अब तक की विकास यात्रा को तय करने में अनेक संकटों, समस्याओं और संघर्षों का सामना करना पड़ा है। कभी भाषा, कभी शिल्प तो कभी चिंतन को लेकर दलित साहित्य पर प्रश्न चिन्ह उठाये जाते हैं। इनमें से कोई दीवार भाषा की है तो कोई कला की है। सहानुभूति बनाम स्वानुभूति से लेकर पुरूष सत्ता, धार्मिक मतभेद, जातिय द्वंद और अस्मिताओं के टकराव से भी दलित साहित्य को आन्तरिक और बाह्य दोनों स्तरों पर जूझना पड़ता है।

जातियकरण के लाभ–हानि के कारण दलित साहित्य के सामने नयी चुनौतियाँ निर्माण होगी। दलित लेखकों को कहना है कि देश की साहित्यिक संस्थाओं को जो सरकारी संरक्षण है, वैसे ही दलित साहित्य अकादमियों को क्यों नहीं मिलता, साहित्यिक सृजकों को प्रकाशन एवं रॉयल्टी क्यों नहीं मिलती?दलित साहित्यकार एक राग हमेशा अलापते रहते हैं कि भारत मे ंपत्रकारिता जगत में दलित वर्ग का प्रभुत्व नहीं है और न ही राष्ट्रीय अखबारों के स्वामी है जिसके कारण अपनी लेखनी के विचार आमजन तक नहीं पहुंचा सकते।

दलित साहित्य के लेखन को लेकर दो गंभीर प्रश्न उठाये जाते हैं। साहित्य का राजनीतिकरण हो रहा है इसके अगुआ कुछ ऐसे रचनाकार हो जाते हैं जो साहित्य से अधिक महत्व राजनीति को देते हैं ऐसी सोच से साहित्य का स्वास्थ्य गिरा है। समाजशास्त्री आशीष नंदी के विवादास्पद बयान के बाद दलित साहित्य खुद के लिए एक चुनौती मानने लगा है। कुछ दलित साहित्यकार खुद ही अपने वर्चस्व के खोखले द्वंद में फंसे हुए हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम का कहना है कि, ''दलित साहित्य के लिए प्रतिकार और आलोचनाओं का माकूल जवाब देने की वजह दलित साहित्यकारों द्वारा स्वयं एक दूसरे पर कीचड़ उछालना और लांछन लगाना निश्चित रूप से चिंता का विषय है यह लांछनवाद तर्क और विचार शून्यता का द्योतक है। स्वयं को मसीहा मानने की चाह बलवती बनी रहती है।''

दलित वर्ग के अभिजात्य वर्ग द्वारा पर्याप्त सहयोग न करने, नारी जगत का पर्याप्त प्रतिनिधित्व न होने, आर्थिक जगत व शिक्षा में कमजोर होने एवं दलित साहित्य को सरकारी संरक्षण न मिलने के कारण यह साहित्य हिन्दी ही नहीं अन्य साहित्यों में भी पर्याप्त स्थान नहीं बना सका है जिस तरह से उसका उदय हुआ है। विभिन्न परिस्थितियों के विपरीत होते हुए भी आज का हिन्दी दलित साहित्य उत्कृष्ट व गुणवत्ता से भरा हुआ उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर है। आज का साहित्यिक परिदृश्य कुछ वैचारिक विपथन के बावजूद यह आश्वासन दिलाता है कि 21वीं सदी दलित साहित्य की है।

6. मूल्यांकन

हर विषय क्षेत्र का मूल्यांकन शोधकर्ता अपने–अपने तरीके व दिमाग से करता है परन्तु हम किसी भी विषय वस्तु का मूल्यांकन अकेले ठीक तरह से कभी नहीं कर सकते हैं। हर विषय क्षेत्र विमर्श एवं बहस का मुद्दा बन जाता है। आज का हिन्दी दलित साहित्य अतीत एवं भविष्य का बहसी मुद्दा बना हुआ है, बहस लगातार जारी है। दलित साहित्य चाहे दलित के द्वारा लिखा गया हो गया गैर–दलित के, इनके माध्यम से बौद्धिक चिन्तन, मनोवैज्ञानिकता में परिवर्तन कर उन्हें सही दिशा की ओर अग्रसर कर अपना सर्वांगीण विकास करने वाले साहित्य की आज के युग को सख्त जरूरत है। साथ ही भावना प्रधान साहित्य की अपेक्षा बौद्धिकता से युक्त तर्क–वितर्क, विचार विवेक पर आधारित साहित्य लिखना न्याय संगत होगा।

इसी के साथ ही दलित लेखकों को पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों से बचते हुए प्रगतिशील रचनाकारों के साथ बहस का द्वार खोलकर उनका स्वागत करना चाहिए। दलित साहित्य को हजारों वर्षों तक जीवित व स्वस्थ रहने की आवश्यकता है। जब तक भारत में जातिय दंश खत्म नहीं हो जाता। दलित साहित्य अपने वजूद व सिद्धान्त को कायम रखते हुए भारत ही नहीं विश्व धरातल पर संवर्द्धन की जरूरत है। भवतु सब्ब मंगलम्।

REFERENCES

[1]दलित चेतना, रमणिका गुप्ता, पृ.सं. 33
[2]दलित नारी : एक विमर्श, डॉ. मंजू सुमन, पृ.सं. 84
[3]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 49
[4]अपेक्षा, जुलाई–सितम्बर 2008 पृ.सं. 13
[5]दलित दखल, श्योराजसिंह 'बेचैन' एवं रजतरानी 'मीनू' पृ.सं. 91
[6]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 53
[7]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 53
[8]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 51
[9]आधुनिक आयने में दलित, अभय कुमार दुबे, पृ.सं. 242
[10]दलित नारी : एक विमर्श, डॉ. मंजू सुमन, पृ.सं. 163
[11]दलित नारी : एक विमर्श, डॉ. मंजू सुमन, पृ.सं. 237
[12]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 10
[13]दलित साहित्य 2013 (वार्षिकी), डॉ. जयप्रकाश कर्दम पृ.सं. 11

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net